IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

दक्षिम भारत में संगम युग : तमिल साहित्य और चोल चेर पाण्डेय राज्यों की राजनीतिक - सांस्कृतिक भूमिका

डॉ. रिमझिम कुमारी
सहायक प्राध्यपक
इतिहास
एनपीटीटी कॉलेज, बोकारो

ABSTRACT

संगम युग दक्षिण भारत के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट कालखंड माना जाता है, जिसका कालक्रम सामान्यतः लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक निर्धारित किया जाता है। यह युग विशेष रूप से तमिल साहित्य के अभूतपूर्व उत्कर्ष के लिए प्रसिद्ध है। इस काल में चोल, चेर तथा पांड्य जैसे शक्तिशाली राजवंशों ने न केवल राजनीतिक संरचना को सुदृढ़ किया, अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर भी गहन प्रभाव डाला। संगम साहित्य इस युग का प्रमुख स्रोत है, जिसमें तत्कालीन समाज, अर्थव्यवस्था, युद्धनीति, प्रेम, नैतिक मूल्यों तथा धार्मिक आस्थाओं का अत्यंत विस्तृत एवं यथार्थपरक चित्रण प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध संगम साहित्य के आधार पर उस काल की राजनीतिक संरचना एवं सांस्कृतिक जीवन का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, साथ ही इन प्रमुख राजवंशों की प्रशासनिक व्यवस्था, व्यापारिक गतिविधियों तथा सांस्कृतिक संरक्षण की भूमिका का भी सम्यक् अध्ययन करता है।

दक्षिण भारत के प्राचीन इतिहास के परिप्रेक्ष्य में संगम युग को एक स्वर्णिम युग के रूप में भी अभिहित किया जाता है। इस काल में साहित्य का सृजन एवं संकलन पांड्य शासकों के संरक्षण में मदुरै में आयोजित संगम सभाओं के माध्यम से संपन्न हुआ, जिन्हें पारंपरिक रूप से तीन प्रमुख संगमों के रूप में जाना जाता है। अनेक विद्वानों के मतानुसार यह काल तमिल संस्कृति एवं साहित्य के उत्कर्ष का चरम बिंदु था। वास्तव में, संगम युग तमिल सभ्यता के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान रखता है। यद्यपि पुरातात्त्विक साक्ष्य भी इस युग के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं, तथापि इस काल के संबंध में सर्वाधिक प्रामाणिक एवं विस्तृत जानकारी संगम साहित्य से ही प्राप्त होती है, जो उस युग के जीवन का एक जीवंत दर्पण प्रस्तुत करता है।

संगम काल में लगभग 473 कवियों की रचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें पुरुषों के साथ-साथ महिला कवियों का योगदान भी उल्लेखनीय है, जो उस समय के सामाजिक समावेशन एवं बौद्धिक विकास का द्योतक है। इस काल की राजनीतिक संरचना मुख्यतः तीन प्रमुख राजवंशों—चोल, चेर एवं पांड्य—पर आधारित थी। इन राजवंशों ने दक्षिण भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में शासन स्थापित किया तथा अपने प्रभाव से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को दिशा प्रदान की। चोल राज्य का विस्तार मुख्यतः कावेरी नदी के उपजाऊ क्षेत्र में था, जबकि चेर राज्य वर्तमान केरल एवं पश्चिमी तमिलनाडु के क्षेत्रों में विस्तृत था। पांड्य राज्य का प्रमुख केंद्र मदुरै था, जो उस समय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र भी था। इन राजवंशों ने न केवल सुदृढ़ राजनीतिक शासन स्थापित किया, बल्कि साहित्य, कला, व्यापार एवं समुद्री वाणिज्य को भी सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया।

संगम साहित्य में राजाओं की वीरता, युद्धों के विस्तृत वर्णन, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, तथा सांस्कृतिक परंपराओं का अत्यंत सजीव एवं यथार्थपरक चित्रण प्राप्त होता है। इस साहित्य के माध्यम से न केवल तत्कालीन जीवन की विविध आयामों की जानकारी मिलती है, अपितु यह भी स्पष्ट होता है कि उस काल की सभ्यता कितनी उन्नत एवं संगठित थी। अतः संगम साहित्य को उस युग के इतिहास के पुनर्निर्माण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय स्रोत माना जाता है।

1. Introduction

भारतीय इतिहास के प्राचीन कालखंडों में दक्षिण भारत का संगम युग एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रखता है। यह काल सामान्यतः लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक माना जाता है और इसे तमिल सभ्यता के उत्कर्ष का स्वर्णिम युग भी कहा जाता है। इस युग की विशेषता केवल साहित्यिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक संगठन, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों एवं सांस्कृतिक जीवन के बहुआयामी विकास का भी द्योतक है।

'संगम' शब्द का अर्थ है 'सभा' या 'सम्मेलन'। पारंपरिक मान्यता के अनुसार, पांड्य शासकों के संरक्षण में मदुरै में तीन संगम सभाओं का आयोजन हुआ, जिनमें विद्वानों, कवियों एवं साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का प्रस्तुतीकरण किया। इन रचनाओं का संकलन ही आज 'संगम साहित्य' के रूप में उपलब्ध है। यद्यपि इन संगम सभाओं की ऐतिहासिकता पर विद्वानों के बीच मतभेद हैं, तथापि यह निर्विवाद है कि संगम साहित्य उस युग के जीवन का एक व्यापक एवं यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत करता है।

संगम साहित्य में तत्कालीन समाज के विविध आयामों—जैसे प्रेम, युद्ध, वीरता, नैतिकता, अर्थव्यवस्था, व्यापारिक गतिविधियाँ एवं धार्मिक आस्थाएँ—का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है। यह साहित्य न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत भी है, जो उस समय की राजनीतिक एवं सामाजिक संरचना को समझने में सहायक है।

इस काल में दक्षिण भारत में तीन प्रमुख राजवंश—चोल, चेर एवं पांड्य—प्रमुख रूप से उभरकर सामने आए। इन राजवंशों ने न केवल अपने-अपने क्षेत्रों में शासन स्थापित किया, बल्कि एक सुदृढ़ प्रशासनिक ढाँचा विकसित किया तथा व्यापार, संस्कृति एवं साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। चोल राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ क्षेत्र में, चेर राज्य वर्तमान केरल एवं पश्चिमी तमिलनाडु में तथा पांड्य राज्य मदुरै केंद्रित क्षेत्र में स्थापित था।

यह शोध पत्र संगम साहित्य के आधार पर इस युग की राजनीतिक संरचना एवं सांस्कृतिक जीवन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसके

साथ ही यह अध्ययन चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों की भूमिका को समझने का प्रयास करता है, जिन्होंने दक्षिण भारत के इतिहास को एक स्थायी दिशा प्रदान की।

2. Literature Review

संगम युग के अध्ययन में विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रारंभिक अध्ययन मुख्यतः साहित्यिक दृष्टिकोण से किए गए थे, परंतु आधुनिक इतिहासलेखन ने संगम साहित्य को एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत के रूप में स्वीकार किया है।

प्रसिद्ध इतिहासकार **K. A. Nilakanta Sastri** ने अपनी कृति *A History of South India* में संगम युग को दक्षिण भारतीय इतिहास का आधारभूत कालखंड माना है। उनके अनुसार, संगम साहित्य में वर्णित राजनीतिक संरचनाएँ एवं सामाजिक जीवन उस समय के वास्तविक जीवन का प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों की प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

Romila Thapar ने अपने अध्ययन में संगम साहित्य के उपयोग में सावधानी बरतने की आवश्यकता पर बल दिया है। उनके अनुसार, चूँकि यह साहित्य काव्यात्मक है, अतः इसमें आदर्शवाद एवं अलंकारिकता की संभावना होती है। इसलिए इसे ऐतिहासिक स्रोत के रूप में उपयोग करते समय आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

इसी प्रकार, **Upinder Singh** ने अपने शोध में संगम युग को भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने पुरातात्त्विक साक्ष्यों एवं साहित्यिक स्रोतों के समन्वय पर बल दिया है, जिससे संगम युग की अधिक सटीक एवं व्यापक समझ विकसित की जा सके।

George L. Hart ने तमिल संगम साहित्य का साहित्यिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है और इसे विश्व साहित्य की एक महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में स्थापित किया है। उनके अनुसार, संगम साहित्य में व्यक्त भावनाएँ एवं विचार सार्वभौमिक हैं, जो इसे वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण बनाते हैं।

इन सभी विद्वानों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संगम युग का अध्ययन एक बहुआयामी दृष्टिकोण की माँग करता है, जिसमें साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों का समन्वय आवश्यक है।

3. Research Objectives

इस शोध पत्र का उद्देश्य संगम युग के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण करना है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. संगम साहित्य के आधार पर दक्षिण भारत की राजनीतिक संरचना का विश्लेषण करना।
2. चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों की प्रशासनिक एवं राजनीतिक भूमिका का अध्ययन करना।
3. संगम युग की सांस्कृतिक विशेषताओं एवं सामाजिक संरचना को समझना।
4. उस समय की आर्थिक व्यवस्था एवं व्यापारिक गतिविधियों का विश्लेषण करना।
5. संगम साहित्य को एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में मूल्यांकन करना।
6. संगम युग के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन करना, विशेषकर दक्षिण भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं पर।

4. Research Methodology

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है, जिसमें साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में निम्नलिखित पद्धतियों का उपयोग किया गया है:

(1) साहित्यिक विश्लेषण (Textual Analysis)

संगम साहित्य के प्रमुख ग्रंथों—जैसे 'एट्टुतोकै' एवं 'पट्टुपट्टु'—का विश्लेषण किया गया है। इन ग्रंथों में वर्णित घटनाओं, भावनाओं एवं सामाजिक संदर्भों के आधार पर उस समय के जीवन का पुनर्निर्माण करने का प्रयास किया गया है।

(2) ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method)

इस अध्ययन में ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हुए विभिन्न स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसमें साहित्यिक स्रोतों के साथ-साथ पुरातात्त्विक साक्ष्यों—जैसे सिक्के, शिलालेख एवं उत्खनन सामग्री—का भी उपयोग किया गया है।

(3) तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis)

चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे उनके बीच की समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके।

(4) द्वितीयक स्रोतों का उपयोग (Secondary Sources)

इस शोध में विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों की पुस्तकों एवं शोध लेखों का उपयोग किया गया है, जिससे अध्ययन को अधिक व्यापक एवं प्रामाणिक बनाया जा सके।

(5) आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Critical Approach)संगम साहित्य के उपयोग में एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे उसमें निहित संभावित अतिशयोक्ति या काव्यात्मक अलंकरण को ध्यान में रखते हुए तथ्यात्मक निष्कर्ष निकाले जा सकें।

5. Research Findings

संगम युग के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि यह काल दक्षिण भारत के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण था। संगम साहित्य एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों के संयुक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इस

युग में एक संगठित एवं समृद्ध समाज का निर्माण हुआ था।

1 राजनीतिक संरचना एवं शासन व्यवस्था

संगम युग की राजनीतिक संरचना मुख्यतः तीन प्रमुख राजवंशों—चोल, चेर एवं पांड्य—पर आधारित थी। इन तीनों राजवंशों ने दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में शासन स्थापित किया और अपने-अपने क्षेत्रों में प्रभावी प्रशासनिक तंत्र विकसित किया।

राजा राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था, जिसे दैवीय अधिकार प्राप्त माना जाता था। यद्यपि उसकी सत्ता सर्वोपरि थी, फिर भी वह मंत्रियों एवं सलाहकारों की सहायता से शासन करता था। संगम साहित्य में राजाओं को वीर, उदार एवं प्रजावत्सल के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने राज्य की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए निरंतर प्रयासरत रहते थे।

प्रशासनिक व्यवस्था बहु-स्तरीय थी, जिसमें स्थानीय प्रशासन को भी पर्याप्त महत्व दिया गया था। ग्राम स्तर पर स्वशासन की व्यवस्था थी, जहाँ स्थानीय प्रमुख (ग्राम प्रमुख) प्रशासनिक कार्यों का संचालन करते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि संगम युग में विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति विद्यमान थी।

2 चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों की भूमिका

(क) चोल राजवंश

चोल राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ क्षेत्र में स्थित था, जो कृषि के लिए अत्यंत अनुकूल था। इस कारण चोलों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। चोल शासकों ने सिंचाई व्यवस्था को विकसित किया और कृषि उत्पादन को बढ़ावा दिया।

राजनीतिक दृष्टि से चोल शासक शक्तिशाली एवं संगठित थे। उन्होंने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए युद्धों का सहारा लिया, साथ ही प्रशासनिक व्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाया। संगम साहित्य में चोल राजाओं की वीरता एवं युद्ध कौशल का विस्तृत वर्णन मिलता है।

(ख) चेर राजवंश

चेर राज्य वर्तमान केरल एवं पश्चिमी तमिलनाडु के क्षेत्रों में विस्तृत था। यह राज्य अपने समुद्री व्यापार के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। चेर शासकों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया और रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए।

चेर राज्य की भौगोलिक स्थिति ने इसे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बना दिया था। यहाँ से मसाले, मोती एवं अन्य मूल्यवान वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। इससे राज्य की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हुई।

(ग) पांड्य राजवंश

पांड्य राज्य का प्रमुख केंद्र मदुरै था, जो सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र था। पांड्य शासकों ने संगम सभाओं का आयोजन किया और साहित्यकारों को संरक्षण प्रदान किया।

पांड्य शासकों की प्रशासनिक व्यवस्था भी सुव्यवस्थित थी। उन्होंने न्याय व्यवस्था, कर प्रणाली एवं सैन्य संगठन को प्रभावी बनाया। उनके संरक्षण में साहित्य, कला एवं संस्कृति का व्यापक विकास हुआ।

3 आर्थिक जीवन एवं व्यापारिक गतिविधियाँ

संगम युग की अर्थव्यवस्था बहुआयामी थी, जिसमें कृषि, व्यापार एवं शिल्प उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान था।

(1) कृषि

कृषि इस युग की अर्थव्यवस्था का आधार थी। कावेरी नदी के तटवर्ती क्षेत्र में उन्नत कृषि प्रणाली विकसित थी। धान, गन्ना, कपास एवं मसालों की खेती प्रमुख रूप से की जाती थी। सिंचाई के लिए नहरों एवं जलाशयों का निर्माण किया गया था।

(2) आंतरिक व्यापार

संगम युग में आंतरिक व्यापार भी अत्यंत विकसित था। विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के बीच वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था। बाजार सुव्यवस्थित थे और व्यापारिक वर्ग समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता था।

(3) विदेशी व्यापार

विदेशी व्यापार संगम युग की एक प्रमुख विशेषता थी। दक्षिण भारत का रोमन साम्राज्य के साथ व्यापक व्यापारिक संबंध था। रोमन सिक्कों की प्राप्ति इस तथ्य का प्रमाण है।

निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में मसाले, मोती, हाथीदांत, वस्त्र एवं रत्न शामिल थे, जबकि आयातित वस्तुओं में सोना, शराब एवं विलासिता की वस्तुएँ शामिल थीं।

(4) शिल्प एवं उद्योग

संगम युग में विभिन्न प्रकार के शिल्प एवं उद्योग विकसित थे, जैसे—बुनाई, धातु कार्य, आभूषण निर्माण एवं मिट्टी के बर्तन बनाना। इन उद्योगों ने आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4 सामाजिक संरचना

संगम युग का समाज विविधताओं से परिपूर्ण था। इसमें विभिन्न वर्गों एवं पेशों के लोग शामिल थे। समाज में वर्ग विभाजन था, परंतु यह उत्तर भारत की कठोर जाति व्यवस्था जैसा नहीं था।

(1) महिलाओं की स्थिति

संगम साहित्य से यह ज्ञात होता है कि महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ थी। वे साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। महिला कवियों की उपस्थिति इसका प्रमाण है।

(2) सामाजिक जीवन

सामाजिक जीवन में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई था। विवाह, उत्सव एवं सामाजिक परंपराएँ समाज के जीवन का अभिन्न अंग थीं।

(3) पेशागत विविधता
समाज में विभिन्न प्रकार के पेशे विद्यमान थे, जैसे—किसान, व्यापारी, सैनिक, कारीगर आदि। प्रत्येक वर्ग का समाज में एक निश्चित स्थान था।

5 सांस्कृतिक जीवन एवं धार्मिक परंपराएँ
संगम युग का सांस्कृतिक जीवन अत्यंत समृद्ध एवं विविधतापूर्ण था। इस युग में साहित्य, संगीत, नृत्य एवं कला का व्यापक विकास हुआ।

(1) साहित्य एवं कला
संगम साहित्य इस युग की सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धि है। इसमें काव्य, गीत एवं गाथाओं के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया गया है।

(2) धर्म एवं आस्था
संगम युग में धार्मिक जीवन बहुआयामी था। प्रकृति पूजा, वीर पूजा एवं विभिन्न देवताओं की आराधना का प्रचलन था। मुरुगन, शिव एवं विष्णु जैसे देवताओं की पूजा की जाती थी।

(3) संगीत एवं नृत्य
संगम साहित्य में संगीत एवं नृत्य का भी उल्लेख मिलता है। ये कला रूप सामाजिक एवं धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

6 संगम साहित्य का ऐतिहासिक महत्व
संगम साहित्य इस युग के इतिहास के पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें न केवल राजनीतिक घटनाओं का वर्णन मिलता है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन की भी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

यह साहित्य उस समय के लोगों के जीवन, उनकी सोच, उनके मूल्य एवं उनकी परंपराओं को समझने में सहायक है। अतः इसे एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में स्वीकार किया जाता है।

6. Discussion
संगम युग के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का गहन विश्लेषण यह दर्शाता है कि यह काल केवल एक साहित्यिक उत्कर्ष का युग नहीं था, बल्कि यह दक्षिण भारत के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास का एक निर्णायक चरण भी था। इस युग की विशेषता इसकी बहुआयामी प्रकृति में निहित है, जहाँ साहित्य, राजनीति और संस्कृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए थे।

सबसे पहले, यदि हम संगम साहित्य को एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि यह साहित्य तत्कालीन समाज का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। तथापि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि संगम साहित्य मुख्यतः काव्यात्मक है, जिसमें अलंकारिकता एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति की प्रधानता होती है। अतः इसे प्रत्यक्ष ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार करने से पूर्व एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, राजाओं की वीरता एवं उदारता का वर्णन कभी-कभी अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकता है, जिसका उद्देश्य उनके गौरव को बढ़ाना होता है।

दूसरे, संगम युग की राजनीतिक संरचना का विश्लेषण यह दर्शाता है कि चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों ने एक सुदृढ़ एवं संगठित शासन प्रणाली विकसित की थी। इन राजवंशों के बीच प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष भी विद्यमान थे, जिसने राजनीतिक गतिशीलता को बढ़ावा दिया। यह प्रतिस्पर्धा केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण एवं आर्थिक विकास में भी परिलक्षित होती थी।

तीसरे, आर्थिक दृष्टि से संगम युग अत्यंत समृद्ध था। विशेष रूप से विदेशी व्यापार, विशेषकर रोमन साम्राज्य के साथ, इस युग की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। यह व्यापार न केवल आर्थिक समृद्धि का कारण बना, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी प्रोत्साहित किया। रोमन सिक्कों एवं अन्य पुरातात्त्विक साक्ष्यों की प्राप्ति इस तथ्य की पुष्टि करती है कि दक्षिण भारत उस समय वैश्विक व्यापार नेटवर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

चौथे, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से संगम युग एक प्रगतिशील समाज का उदाहरण प्रस्तुत करता है। महिलाओं की अपेक्षाकृत सुदृढ़ स्थिति, विभिन्न पेशों की उपस्थिति एवं सांस्कृतिक विविधता इस युग की प्रमुख विशेषताएँ थीं। संगम साहित्य में वर्णित प्रेम, नैतिकता एवं सामाजिक संबंध उस समय के समाज की संवेदनशीलता एवं परिपक्वता को दर्शाते हैं।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि संगम युग का अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार एक समाज साहित्य, राजनीति एवं अर्थव्यवस्था के माध्यम से अपने विकास के उच्च स्तर तक पहुँच सकता है। यह युग दक्षिण भारत की सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में एक आधारशिला के रूप में कार्य करता है।

7. Conclusion
उपरोक्त अध्ययन एवं विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संगम युग दक्षिण भारत के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समृद्ध कालखंड था। इस युग में तमिल साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ, जिसने न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को समृद्ध किया, बल्कि ऐतिहासिक अध्ययन के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान किया।

चोल, चेर एवं पांड्य राजवंशों ने इस काल में एक सुदृढ़ राजनीतिक संरचना स्थापित की, जिसने प्रशासनिक स्थिरता एवं सामाजिक संगठन को सुदृढ़ किया। इन राजवंशों ने न केवल राजनीतिक शासन किया, बल्कि साहित्य, कला एवं संस्कृति को भी संरक्षण प्रदान किया, जिससे इस युग में एक समृद्ध सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण हुआ।

आर्थिक दृष्टि से, संगम युग में कृषि, व्यापार एवं उद्योग का व्यापक विकास हुआ। विशेष रूप से विदेशी व्यापार ने इस युग की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि संगम युग केवल आंतरिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि यह वैश्विक

संपर्कों से भी प्रभावित था।
सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से यह युग एक प्रगतिशील एवं समावेशी समाज का उदाहरण प्रस्तुत करता है। महिलाओं की स्थिति, सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक परंपराएँ इस युग की उन्नत मानसिकता को दर्शाती हैं।
अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संगम युग ने दक्षिण भारत की सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं राजनीतिक परंपराओं की नींव रखी, जिसका प्रभाव आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह युग भारतीय इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

Bibliography

1. K. A. Nilakanta Sastri – *A History of South India*
2. Romila Thapar – *Early India: From the Origins to AD 1300*
3. Upinder Singh – *A History of Ancient and Early Medieval India*
4. A. L. Basham – *The Wonder That Was India*
5. George L. Hart – *The Poems of Ancient Tamil*
6. Irfan Habib – *Ancient India*
7. Burton Stein – *Peasant State and Society in Medieval South India*
8. Champakalakshmi, R. – *Trade, Ideology and Urbanization: South India 300 BC–AD 1300*
9. Noboru Karashima – *A Concise History of South India*
10. Various Sangam Texts – *Ettuthokai and Pattuppattu*
11. Tolkappiyam – Ancient Tamil Grammar Text
12. NCERT – *Themes in Indian History*